ा संश्रयाय,
क पुनर्यस्तथोच्चैः॥ 17॥
किये गये उपकार के कारण
। महान् है वह कैसे (विमुख

ट पर्वत पर अतिथि रूप में
ी है।
पूर्णता गौरवाय॥ 20॥
के तथा पूर्णता गौरव के लिए

मो हि प्रियेषु॥ 29॥
ति विलास प्रारम्भिक प्रार्थना

ाये गये विभ्रम के संदर्भ में।
विहातुं समर्थः॥ 45॥
या हुआ कौन-सा पुरुष जंघा
का परित्याग करने में समर्थ

ाजघना से गम्भीरा का संकेत।
दो ह्युत्तमानाम्॥ 57॥
ायाँ आर्त्तजनों के कष्टों को दूर

ाता है अतः उसे 'उत्तम' कहा

ष्फलारम्भयत्नाः॥ 58॥
न्न करने वाले कौन से व्यक्ति
ात् अवश्य होते हैं)
यास करने वाले 'शरभों' के

ूक्तियाँ
यति स्वामभिख्याम्॥ 20॥
ने पर कमल निश्चित रूप से
करता।
त्तिरार्द्रान्तरात्मा॥ 35॥
हृदय वाले व्यक्ति दयालु

मात्किञ्चिदूनः॥ 40॥
प्रियतम का संदेश स्त्रियों के
ता है।

भावार्थ – प्रेमी याचकों के अभीष्ट प्रयोजन को सिद्ध करना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

मेघदूतम् (व्याख्या 1-10 श्लोक)

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥

अन्वय - स्वाधिकारात् प्रमत्तः कान्ताविरहगुरुणा वर्षभोग्येण भर्तुः शापेन अस्तङ्गमितमहिमा कश्चित् यक्षः जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु रामगिर्याश्रमेषु वसतिं चक्रे।

शब्द	अर्थ
स्वाधिकारात्	अपने कर्त्तव्य पालन में
प्रमत्तः	असावधान
कान्ताविरहगुरुणा	प्रिया के वियोग से दुःसह एक वर्ष पर्यन्त भोगे जाने वाले
भर्तुः	स्वामी-कुबेर के
शापेन	शाप से
अस्तङ्गमितमहिमा	जिसकी महिमा नष्ट हो चुकी है,
कश्चित्	कोई
यक्षः	यक्ष
जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु	जनक की पुत्री सीता जी के स्नान से पवित्र जल वाले
स्निग्धच्छायातरुषु	घने छायादार वृक्षों से युक्त
रामगिर्याश्रमेषु	रामगिरि नामक पर्वत के आश्रमों में
वसतिम्	निवास
चक्रे	किया

अनुवाद- अपने कार्य से असावधान, प्रिया के विरह से दुःसह, एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जल वाले, घने छाया वाले वृक्षों से युक्त, रामगिरि (पर्वत) के आश्रमों में निवास करता था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

समास

- **स्वाधिकारात्** - अधिक्रियते अस्मिन् इति स्वस्य अधिकारः स्वाधिकारः तस्मात् (षष्ठी तत्पुरुष समास अथवा कर्मधारय समास)
- **अस्तङ्गमितमहिमा** - अस्तं गमितः महिमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **स्निग्धच्छायातरुषु** - छायाप्रधानाः तरवः छायातरवः, स्निग्धाः छायातरवः येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)

Scanned with OKEN Scanner

- **रामगिर्याश्रमेषु** - रामगिरेः आश्रमेषु रामगिर्याश्रमेषु - षष्ठी तत्पुरुष
- **वर्षभोग्येण** - भोक्तुं योग्यः भोग्यः, वर्षभोग्यस्तेन तत्पुरुष समास
- **जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु** - जनकस्य तनयायाः सीतायाः स्नानैः अवगाहनैः पुण्यानि पवित्राणि उदकानि जलानि येषु तेषु - (बहुव्रीहि समास)
- **कान्ताविरहगुरुणा** - कान्तायाः प्रियायाः विरहः वियोगः तेन गुरुणा - तृतीया तत्पुरुष

कारक -

- **स्वाधिकारात्** - 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' वार्तिक से पञ्चमी का प्रयोग
- **वर्षभोग्येण** - कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे से तृतीया
- **शापेन** - हेतौ सूत्र से तृतीया।
- **प्रमत्तः** - 'जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' से पंचमी

प्रत्यय -

- **अधिकारः** - अधि + कृ + घञ्
- **प्रमत्तः** - प्र + मद् + क्त
- **भर्तुः** - भृ + तृच्
- **शापेन** - शप् + घञ्
- **गमित** - गम् + णिच् + क्तः
- **महिमा** - महत् + इमनिच्
- **वसतिम्** - वस् + अति
- **चक्रे** - कृ + लिट् प्रथम पुरुष, एकवचन, आत्मनेपद
- **रस** - मेघदूतम् में विप्रलम्भ श्रृंगार का प्रयोग किया गया है। विप्रलम्भ श्रृङ्गार के भी चार भेद होते है

1. पूर्वराज 2. मान 3. प्रवास - भावी, भवन्, भूत 4. करुण

इसमें भवन नामक प्रवास का उल्लेख है।

- **छन्द** - सम्पूर्ण मेघदूतम् में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है।
- **लक्षण** - 'मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्भौ न तौ ताद् गुरू चेत्' अर्थात् इस छन्द में प्रत्येक पाद में 17 अक्षर होते हैं। वे मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रम में होते है। चौथे, दसवें और सत्रहवें अक्षर पर यति होती है।
- **अलङ्कार** - इस श्लोक में शाप के प्रति "स्वाधिकारात्प्रमत्तः" की हेतुता होने से पदार्थ हेतुक **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है।
- 'कान्ताविरहगुरुणा' यहाँ कान्ता पद का प्रयोग कवि की इस बात का सूचक है कि यक्ष को अपनी पत्नी से विशेष प्रेम था, क्योंकि जो भाव कान्ता पद से व्यक्त होता है वह पत्नी या भार्या से नहीं। यहाँ कान्ता पद का प्रयोग साभिप्राय है, इसलिए **परिकरालङ्कार** है। क्योंकि जहाँ विशेष्य साभिप्राय हो वहाँ परिकर अलङ्कार होता है।
- **लक्षण** - "**विशेषणैर्यत् साकूतैरुक्तिः परिकरश्च सः**"
- **विशेष** - ग्रन्थ के निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति के लिए ग्रन्थ के आरम्भ में मङ्गलाचरण किया जाता है। मङ्गलाचरण के तीन भेद हैं-

- "आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वाऽपि तन्मुखम्"

1. आशीर्वादात्मक 2. नमस्क्रियात्मक 3. वस्तुनिर्देशात्मक

यहाँ वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

- काव्य के आरम्भ में 'क' वर्ण का प्रयोग हुआ है, 'क' शब्द वायु, ब्रह्मा और सूर्य का वाचक है अतः देवता वाचक शब्द का प्रयोग होने से मङ्गल का ही अनुष्ठान किया गया है।

श्लोक से पूछे जा सकने वाले सम्भावित प्रश्न -

- इस श्लोक में कौन सा मङ्गलाचरण है? वस्तुनिर्देशात्मक
- इसमें कौन सा छन्द प्रयोग किया गया है? मन्दाक्रान्ता
- यक्ष को कितने दिनो का शाप मिला था? - एक साल
- यक्ष को किसने शाप दिया था? - यक्षों के स्वामी कुबेर
- यक्ष को शाप देने का क्या कारण था? - अपने कार्य से असावधानी के कारण
- 'कश्चित्' शब्द किसके लिए आया है? - यक्ष के लिए
- रामगिरि आश्रम किसके स्नान करने से पवित्र हो गया था? - जनकतनया सीता के
- यक्ष को शाप देने की तिथि क्या थी? - देवोत्थान एकादशी
- चक्रे शब्द किस लकार और वचन में है बताइये? - कृ लिट् लकार, प्रथम पु., एक.

श्लोक - 2

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥2

अन्वय - तस्मिन् अद्रौ अबलाविप्रयुक्तः कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः कामी स कतिचित् मासान् नीत्वा आषाढस्य प्रथमदिवसे आश्लिष्टसानुम् वप्रकीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम् मेघम् ददर्श।

शब्द	अर्थ
तस्मिन्	उस
अद्रौ	पर्वत पर
अबलाविप्रयुक्तः	प्रियतमा से वियुक्त
कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः	स्वर्ण कङ्कण के गिरने से शून्य कलाई वाले
कामी	कामुक
सः	उस यक्ष ने
कतिचित्	कुछ
मासान्	महीनों को
नीत्वा	बिताकर
आषाढस्य	आषाढ मास के
प्रथमदिवसे	प्रथम दिन
आश्लिष्टसानुम्	पर्वत की चोटी से सटे हुए
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयम्	टीले की मिट्टी के उड़ाखने में तिरछा दन्तप्रहार करने वाले हाथी के समान दर्शनीय

Scanned with OKEN Scanner